व्यंग्य

पत्नी की तीस लाख रॉयल्टी वाली ज़िद

रेखा शाह आरबी

चतुरी जी अपने जीवन में इतना परेशान कभी नहीं हुए हैं. जितना वह आजकल चल रहे हैं .पहले बाहर परेशानी चलती थी तो घर में आकर चैन की सांस ले लेते थे. और यदि घर में तांडव मचा हुआ रहता था तो बाहर शरण ले लेते थे . ऐसे करके उनका जीवन आराम से चल जाता था. लेकिन आजकल उन्हें ना घर में चैन है और ना बाहर चैन है . घर में उनकी घरवाली उनका चैन से जीना मुश्किल किए हुए हैं. और बाहर उनके साहित्यिक मित्र उनका जीना मुश्किल किए हुए हैं.

सबसे पहले बता दूं चतुरी जी छोटे-मोटे लेखक हैं. दस जगह हाथ पांव मारते हैं .तो कहीं ना कहीं एक जगह प्रकाशित हो जाते हैं .कभी मुफ्त में तो कभी कुछ मिल भी जाता है . ले देकर पैसे देकर किसी तरह एक पुस्तक छपाई वह भी मित्रों को मुफ्त में बांटनी पड़ी रॉयल्टी मिलना तो उनके लिए बहुत दूर की बात थी. इस तरह उनके लेखन को बहुत ज्यादा इज्जत घर में नहीं मिलती थी . तो बहुत ज्यादा कुआदर भी नहीं होता था. यहां तक तो सब ठीक था. जिंदगी थोड़ी बहुत खींच -खांचकर उनकी अच्छी खासी चल रही थी.

लेकिन जब से चतुरी जी ने अपनी पत्नी से बताया है कि साहित्य के होनहार लेखक को 30 लाख की रॉयल्टी मिली है. तब से सब कुछ उनकी दुनिया में उलट-पुलट हो गया है. तब से उनकी जिंदगी में तूफान आया हुआ है. वह तो उस घड़ी को कोसते हैं जब अपनी बीवी को यह 30 लाख की रॉयल्टी वाली बात बताई .अब सोचते हैं कि यदि नहीं बताई होती तो कम से कम जिंदगी तो आराम से चल रही होती. इतने तूफान तो जिंदगी में नहीं आए होते. लेकिन 30 लाख की रॉयल्टी वाली बात ही इतनी बड़ी थी कि वह इस बात को पचा नहीं पाए. और अपनी बीवी से जिक्र कर दिए. इंसान अपना दुख और सुख अपने जीवन साथी से ही तो बांटता है.चतुरी जी ने अपना दुख अपनी पत्नी से बांटा लेकिन उन्हें क्या पता था यह दुख बांटना उनके दुख को और बड़ा कर जाएगा.

अब उनकी पत्नी चाहती है कि चतुरी जी भी 30 लाख की रॉयल्टी मिले.. ऐसी पुस्तक लिखें. और सिर्फ चाहती नहीं है बल्कि जबरदस्ती लिखवाने पर उतारू भी है. चतुरी जी के तो होश फाख्ता हो गए. अरे.. ऐसे कैसे आसानी से 30 लाख की रॉयल्टी वाली कोई पुस्तक लिख देगा. यह तो साहित्य इतिहास की अद्भुत अलौकिक घटना है .जाने कितने ग्रहों का संयोग एक साथ बैठा होगा . तब जाकर लेखक महोदय के जीवन में ऐसी शुभ घड़ी आई है. और सब की किस्मत इतनी अच्छी होगी यह जरूरी तो नहीं है. लेकिन- वेकिन पत्नी जी को कुछ नहीं सुनना है. उनकी पत्नी का साफ -साफ़ कहना है कि या सिर के बल खड़े होकर लिखो या उल्टे होकर लिखो जैसे भी लिखो लेकिन लिखो. बेचारे पत्नी के चंगुल में बहुत बुरी तरीके से फंसे हुए हैं. इस विपदा से बाहर निकलने का उन्हें कोई भी राह नहीं दिखाई दे रहा है.

चतुरी जी का तो जीवन संकट में पड़ चुका है. कहां तो छोटे-मोटे समाचार पत्र भी उन्हें छापने में नखरे दिखाते हैं .और कहां 30 लाख की रॉयल्टी मतलब एकदम आसमान छूने जितनी यह तो बात है. जो उनके लिए तो बिल्कुल संभव नहीं है. लेकिन वह पत्नी ही क्या जो किसी बात को समझ जाए. उसने तो कैकई के जैसे कोपभवन धारण कर लिया है. घर का चूल्हा चौका सब हड़ताल पर भेज दिया है. चाय नाश्ते को उठाकर ताखे पर रख दिया है .

अब तो कुछ भी हो लेकिन उसकी जिद है कि 30 लाख की रॉयल्टी वाली पुस्तक तो लिखनी ही पड़ेगी. पत्नी से जान छुड़ाकर घर से भागते है तो उनके साहित्य मित्र मंडली मुस्कुराते हुए ताने मार देती है.चतुरी जी अब आप कब 30 लाख की रॉयल्टी वाली पुस्तक लिख रहे हैं. और कब हम लोगों को पार्टी दे रहे हैं.

पत्नी धरने पर बैठी है और उधर उनके दोस्त अलग से ताने की दुकान खोल कर बैठे हैं. अब चतुरी जी को समझ नहीं आ रहा की कहां पर शरण ले. बेचारे अब तो ना घर के हैं ना घाट के हैं. ईश्वर उनके पत्नी से उनकी रक्षा करें.

क्लास by बड़े भाई

ऐसे खोजिए अपने दिल का काम

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

2009 में आयी एक फ़िल्म 'थ्री इडियट्स' ने हर युवा के मन में अपने दिल का काम चुनने के लिए किसी भी हद्द तक जाने की हिम्मत भर दी थी. उसका यह डायलाग कि 卐वो काम करो जिसमें तुम्हारा मन लगता हो फिर तुम्हें काम काम नही, खेल लगेगा, तुम खुश रहोगे 卐 इसी तरह था कुछ कुछ.

छोटे भाई, आज आपको वही मन का काम चुनने का एक तरीका बताता हूँ जो आपकी बड़ी मदद कर सकता है जिससे आपको भी फिर अपना काम, काम नही खेल लगेगा. आप अपने काम का आनंद ले सकेंगे और अपनी आर्थिक ज़रूरतें भी पूरी कर सकेंगे. मैं अपनी कहूँ तो मैंने यही तरीका अपनाकर आज अपने मन का काम कर रहा हूँ यानि यह मेरा निजी अनुभव भी है .

इसके लिए करना यह है कि अपने आपको थोड़ा एकांत दीजिए और यह विचार करिए कि 'वह कौन सा काम है जिसको करने से यदि कोई पहचान न भी मिले, कोई पैसा भी ना मिले तो भी आप सारी जिंदगी करते रहना चाहेंगे' या इस तरह सोचिये कि 'वह क्या काम है जिसके बारे में सुनते ही या कहीं वह काम होते देखते ही या उस काम का विचार मात्र आपका अंतर्मन, आनंद और उत्साह से तरबतर कर देता है और आपके भीतर वह करने की इच्छा पनपने लगती है'.निश्चित ही यह तरीका आपको आपके मन का काम बता देगा. इसमें समय भी लग सकता है. लगने दीजिये कोई जल्दबाजी मत दिखाइये.

अब इस प्रक्रिया से आपके दिल दिमाग में कई ऐसे काम उमड़ेंगे जो आप हमेशा करते रहना चाहोगे लेकिन एक साथ इतना सब कैसे संभव है. आपकी इस दुविधा को आगे की प्रक्रिया सुलझा देगी. आपको आपके मन में आए ऐसे सारे कामों में यह खोजना है कि 'किस काम से आप दुनिया की सबसे अधिक मदद कर सकते हैं जिसके लिए वो आपको आर्थिक लाभ दे सके. बस उसी काम से आपको शुरुआत करनी है, फिर धीरे धीरे बाकी सारे काम भी होते रहेंगे.

ध्यान रहे अक्सर लोग किसी काम में आर्थिक फायदे देखकर उसे शौक में गिनते है बल्कि जो इस फायदे के बिना भी आप करते रहना चाहेंगे हम उसमें ढूंढें कि इसमें किस तरह आर्थिक फायदा मिल सकता है.आप समझ रहे होंगे.

विश्वास है यह प्रक्रिया आपके भी दिल का काम खोजने में पूरी मदद करेगी. आपको थोड़ी हिम्मत जुटाकर, समझदारी से निर्णय लेकर थोडा उस ओर प्रयास करते रहना होगा. धीरे धीरे आपका शौक, आपका काम बन जाएगा और आप भी थ्री ईडियट्स के रेंचो, फरहान और राजू हो जाएंगे. बस यही कहना था, धन्यवाद

लघुकथाएं

माँ

डॉ. उपमा शर्मा

दर्द के इंजेक्शन का असर खत्म हो रहा था. टाँकों के दर्द से बेचैन रिया की आँख खुल गई. रिया ने राउंड पर आई नर्स को अपने तेज़ दर्द का बताया लेकिन उसने समय से पहले पेन किलर की दूसरी डोज़ देने में असमर्थता जाहिर कर दी. वो रिया को ड्रिप रेगुलेट कर दूसरे पेशेंट को चैक करने चली गई. दर्द की शिद्दत बढ़ रही थी. रिया सोने की कोशिश करने लगी लेकिन दर्द की अधिकता सोने नहीं दे रही थी. अभी न जाने कितनी देर और ऐसे ही बर्दाश्त करना था. ये रात कब खत्म होगी और कब डॉक्टर आयेगी? रिया अपने में ही बड़बड़ा रही थी.

कुछ दूरी पर अटैंडेंट बैड पर माँ गहरी नींद में सो रहीं थीं. खुद हाई ब्लड प्रैशर की रोगी माँ इस उम्र में भी उसकी और कुछ घंटों पहले जन्मी उसकी नन्हीं बिटिया की देख-रेख में कसर नहीं छोड़ रहीं थीं. दवाइयों के असर से रिया अब तक नींद में ही थी. नन्हीं बिटिया परी थोड़ी-थोड़ी देर में जाग जाती. माँ झट बॉटल ले उसे दूध पिलाने बैठ जातीं.नीम -बेहोशी में उसे परी की थोड़ी-थोड़ी आवाज कानों में पड़ती लेकिन दर्द की अधिकता और डॉक्टर की हिदायत से माँ उसे बिस्तर से नहीं उठने दद रहीं थीं. दिन-भर की भागदौड़ के बाद अपनी माँ को कुछ पल सुकून की इतनी गहरी नींद में सोते देख इतने दर्द में भी उसके होठों पर मुस्कुराहट आ गई. पास ही कुछ घंटों पहले दुनिया में आई परी भी इस समय सो रही थी.

ताजा लगे टाँकों में दर्द कुछ ज्यादा ही था. वो करवट भी नहीं बदल पा रही थी. अपनी नींद पूरी कर अब परी ने जागकर रोना शुरू कर दिया. माँ की गहरी नींद में परी के रोने के धीमे सुर नहीं पहुँच रहे थे. उसने माँ को आवाजें दी. पर माँ थकान के कारण बहुत गहरी नींद में थीं.कुछ देर पहले जन्मी परी और कमजोरी से उसकी उसकी दोनों की ही धीमी आवाज़ उन्हें जगाने में बेअसर थी. उसने परेशान हो नर्स को आवाज़ लगाई. वो भी शायद दूसरे कमरे में चली गई थी. परी का रोना बढ़ता जा रहा था. उसने फिर माँ को पुकारा. अब तक परी ने रोने में पूरी ताकत लगा दी. उसने धीरे से करवट ली. दर्द की तेज़ लहर पूरे शरीर में दौड़ गई. परी का गुलाबी चेहरा रोने से लाल हो उठा. माँ के हड़बड़ा कर उठने से पहले ही उसने पूरी ताकत लगा परी को उठा सीने से लगा लिया. भूख से बेहाल बच्ची दूध मिलने पर चुप हो गई. रिया दर्द से दोहरी हो रही थी पर उसकी आँखों में अपनी बच्ची के संतोष का असीम सुख छलक रहा था.

तरकीब

बहू, देख ले बेटा. सब्जी और दूध ले आया हूँ. ला रजत का होमवर्क मैं करा दूँ. तू और कोई काम देख ले.

दादाजी की चहकती आवाज सुन मुस्कुरा दी अनु. अब दादाजी के चेहरे पर छायी उदासी उड़न-छू हो गयी थी. पिछली बार जब हॉस्टल से वापस आयी थी अनु तो उसने दादाजी में एक अजीब सा परिवर्तन देखा था. दादाजी एक कमरे में चुपचाप लेटे या बैठे रहते थे. अनु अपने प्यारे दादाजी को यूँ चुपचाप पड़े देखकर दुःखी हो गयी थी. मम्मी-पापा भी परेशान थे.

माँ, दादाजी को क्या हुआ? ऐसे चुपचाप तो कभी नहीं रहते थे. उसने पूछा था.

पता नहीं बेटा. हम लोग भी परेशान हैं. बाबूजी चल फिर भी कम ही पाते हैं. घर में उदासी-सी छाई रहती हैज्बेटा, हम तो बाबूजी की पूरी सेवा करते हैं. किसी काम के लिए भी नहीं कहते. मम्मी भी दादाजी की बीमारी को लेकर उदास थी.

अनु दादाजी के कमरे में जाकर बोली थी, दादाजी, मेरे साथ मार्निंग वाक पर चलिए न.

नहीं बेटा. क्या करोगी मुझे साथ लेजाकर. मैं तो अब बेकार हूँ बेटा. ज्यादा चल-फिर भी नहीं पाता. अब मेरी कोई उपयोगिता नहीं.

अनु को दादाजी की उदासी का कारण मिल गया था. मम्मी-पापा दादाजी को कोई काम नहीं करने देते थे. इससे दादाजी अपने को बेकार मान अवसाद का शिकार हो गये थे. फिर अनु दादाजी को अपने छोटे-छोटे कामों के लिए भी बुलाने लगी थी. बाबूजी की उदासी का कारण उसकी माँ की भी समझ आ गया. बाजार के काम माँ ने बाबूजी को सौंप दिये थे.

कविताएं

ऐ चाँद

सुचिता सकुनिया

ऐ चाँद,
अंधेरी रात में तेरी चाँदनी तले बैठ
दिल को मिलता है अजीब-सा सुकून।
छत पे घंटों तुझे निहारते,
ना जाने कब
तेरी चाँदनी ले जाती मुझे
तन्हाई से दूर।

ऐ चाँद,
तुझमें खो कर ढूँढा करते हम
अधूरे सपनों में लिपटे सितारों को।
और फिर तेरे संग ये नटखट सितारे
शरद चाँदनी की छाँव तले
लुभाने लगने लगते हैं मेरे अंतर्मन को।

अक्सर तेरी रोशनी में
निकल पड़ती नयन से
अनचाहे लम्हों की वो धारा,
तभी धुँधले पड़ जाती
पूनम के चाँद की भी सुन्दर काया।

बीते लम्हे थामे, जिंदगी नहीं चलती,
चाँद की रूप की तरह, जिंदगी भी हर पल
बदलती है।
और आने वाले पल को
खुशियों से भर देती है।

आज शरद ऋतु का चाँद देखो कितना सुंदर
आया है,
लगता है जैसे अपने साथ
नई उम्मीद का संदेश लाया हो।

ऐ चाँद,
तेरी चाँदनी से मेरी गुफ़्तगू
समझ ना आएगी किसी को,
शायद देखा ना होगा कभी किसी
ने
चाँद की चाँदनी में किसी को
ऐसे खोते हुए।

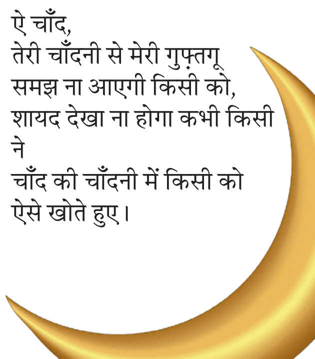

शरद चंद्र की धवल चाँदनी

शरद चंद्र की धवल चाँदनी,
राकापति अमृत बरसाते ।
अमृत बरस रहा वसुधा पर,
जनजीवन में सब हरसाते ।।

शमन-दमन हों रोग-दोष सब,
नित शीतल मंद समीर बहे ।
पुलकित मानस, प्रमुदित तन-मन,
जन कोई नहीं अधीर रहे ।।

कल-कल करते नदियाँ-झरने,
वन-उपवन कलरव सरसाते ।

शरद चंद्र की -धवल चाँदनी,
राकापति अमृत बरसाते ।।
टिम-टिम करते तारे नभ में,
सोलह कला चन्द्र है शोभित ।
विचरण करतीं सिन्धुसुता निशि,
सारा जग ही उमगित, मोहित।।

सुरभित शीतल वसुधा प्रमुदित,
सुर, नर, मुनि जन सब हरसाते।।
शरद चंद्र की धवल चाँदनी,
राकापति अमृत बरसाते।।

✍ डॉ. कमल किशोर दुबे

उड़ान

गली मोहल्ले में खेलने जाने से
क्यों डरती हैं , बेटियाँ...

बचपन से ही किसी को भाई ,
मामा ,चाचा पुकारा करती थी

आज सभी की नज़रें बदल गई
घरों में ही सुरक्षित नहीं

बेटियाँ करती हैं सवाल
बाहर निकलने को पंख दो
हमें
बेखौ़फ़ घूम सकें

उड़ान भरें
अंतरिक्ष में
सुनीता
विलियम सी

जाकर रहूँ
क्या किसी
दूसरे ग्रह
पर...
यहाँ की धरती,
सुरक्षित नहीं

दहलीज

कुसुम वागड़े

रोशनदान के प्रकाश से नहीं,
आज खुद का उजास है मुझमें

चौखटों के आगे अब
सिर नहीं झुकाती...

खिड़कियाँ खुल जाती हैं
बाँहें फैलाए मेरे लिए

घर के दरवाज़े टोकते नहीं
बेख़ौफ़ निकल जाती हूँ

घर की देहरी के घेरे से आज़ाद
नए मकानों मेंअब दहलीज़ नहीं होती

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी